शुम्पीटर का नवप्रवर्तन सिद्धान्त -(2)

शुम्पीटर के अनुसार नवप्रवर्तन में ये बातें शामिल हो सकती हैं:
(i) नई वस्तु का प्रचलन
(ii) उत्पादन की नई विधि का प्रचलन,
(iii) नए मार्किट खोलना
(iv) कच्चे माल के लिए नए स्रोतों को खोज निकालना,
(v) उद्योग का पुनर्संगठन ।

जब उद्यमी इनमें से किसी एक नवप्रवर्तन का प्रचलन करता है तो, उसके परिणामस्वरूप वस्तु के उत्पादन की लागत उसके विक्रय मूल्य से कम हो जाती है। इससे लाभ प्रकट होते हैं। जब तक यह विशेष नवप्रवर्तन गुप्त रहता है, तब तक उद्यमी लाभ प्राप्त करता रहता है। परन्तु यह स्थिति अनिश्चित काल तक नहीं चल सकती। अन्य उद्यमी उस नवप्रवर्तन पर टिड्डी दल की भांति टूट पड़ते हैं। साधन-सेवाओं के लिए प्रतियोगिता के परिणामस्वरूप उत्पादन की लागत बढ़ जाती है जबकि उत्पादन में वृद्धि होने से कीमतें गिर जाती हैं। इस दोहरी प्रवृत्ति का परिणाम यह होता है कि

Page No.:
Date:

लाभ समाप्त हो जाते है।

एक नवप्रवर्तन के कारण लाभों का प्रकट होना किसी एक ही उद्योग की विभिन्नता नही होती। एक क्षेत्र मे होने वाला नवप्रवर्तन अन्य क्षेत्रों में भी नवप्रवर्तन को प्रोत्साहित करता है। कारों के उद्योग से राजमार्गों के निर्माण एवं टायर और पैट्रोलियम की वस्तुओं आदि में नए निवेश की लहर दौड़ सकती है। लाभ नवप्रवर्तन के कार्य और कारण होने हो होते है। तो लाभ प्रकट होते है।

कभी एक उद्योग में और कभी दूसरे में लाभ प्रकट और समाप्त होते है। इनकी स्थिति अस्थायी होती है और वे उस उद्यमी को प्राप्त होते है जो नवप्रवर्तन करता है। परन्तु जब वह नवप्रवर्तन सामान्य बन जाता है, तो लाभ समाप्त हो जाते है।

Scanned by CamScanner